



महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म् आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12

अंक : 41

रोहतक, 28 मार्च, 2016

वार्षिक शुल्क : 150/-

आजीवन 1500/-

जन्म-मरण के दुःखों से मुक्ति के विवेक व वैराग्य आदि चार साधन

मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति व मोक्ष की प्राप्ति है। मुक्ति व मोक्ष एक प्रकार की जीवात्मा को पूर्ण स्वतन्त्रता है जिसमें शुभ व अशुभ कर्मों के फलों का भोग नहीं होता। यह स्वतन्त्रता वा मुक्ति हमें अपने मिथ्या व अशुभ कर्मों के फलों के भोग से चाहिये। जब भी कोई मनुष्य शुभ व अशुभ कर्म करता है तो उस कर्म की वासना



□ मनमोहन कुमार आर्य

तो मनुष्य वा योगी को हो जायेगा अन्यथा मनुष्य इस क्षेत्र में उत्तरोत्तर आगे बढ़ सकता है। मोक्ष कब मिलेगा यह तो मनुष्य की अपनी साधना व कर्मों के साथ ईश्वर की कृपा पर निर्भर है। हमारा व सभी विज्ञ मनुष्यों का उद्देश्य इस बात पर ही केन्द्रित होना चाहिये कि

का संस्कार उसके चित्त पर अंकित हो जाता है, प्रायः उसी प्रकार जिस प्रकार से आंखों के सामने चित्र आता है या कैमरे में चित्र अंकित होता है। इस कर्म का फल जब तक कर्म का कर्ता जीवात्मा वा मनुष्य भोग नहीं लेता, उसके जन्म व मृत्यु का क्रम चलता रहता है। यदि जन्म न हो अर्थात् जन्म-मरण का क्रम रुक जाये, तो इसके लिए हमें पूर्व जन्म-जन्मान्तरों में किए हुए सभी अशुभ कर्मों का फल भोगकर भविष्य में जन्म व मृत्यु के कारण शुभ व अशुभ कर्मों को बन्द करना होगा व परमार्थ के कर्म यथा ईश्वरोपासना, यज्ञ, दान, सत्संगति आदि कर्म ही करने होंगे। हम शुभ व अशुभ कर्म किसी इच्छा व लोभ के कारण ही करते हैं। इसके लिए हमें ज्ञान व विवेक की आवश्यकता है। विवेक से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि अमुक कर्म का फल हमें क्या-क्या मिल सकता है। अतः हमें अपने कर्मों के फलों की आसक्ति को हटाना व दूर करना होगा व इसके साथ ही अशुभ कर्म जिससे दूसरे मनुष्य आदि प्राणियों का अपकार होता है, उन्हें भी पूर्णतः छोड़ना होगा। ऐसा होने पर ईश्वर का साक्षात्कार या

हम मोक्ष के अनुरूप साधना कर रहे हैं वा नहीं। यदि हमारी साधना, वेद व योगदर्शन के अनुसार होगी तो परिणाम भी उसके अनुरूप श्रेयस्कर ही होगा। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में एक प्रश्न प्रस्तुत किया है कि मुक्ति के क्या-क्या साधन हैं? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि मुक्ति के कुछ साधन वह सत्यार्थप्रकाश में लिख चुके हैं। उन साधनों के अतिरिक्त मुक्ति चाहने वालों को विशेष साधन यह करना है कि वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है, उनको छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करें। यह जीवनमुक्त अवस्था है। जो मनुष्य दुःख से छूटना और सुख को प्राप्त करना चाहे वह अधर्म को छोड़कर धर्म के कार्य अवश्य करे क्योंकि दुःख का मूल कारण पापाचरण और सुख का धर्माचरण है। सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म व कर्तव्यकर्तव्य का निश्चय अवश्य करें तथा इन्हें पृथक-पृथक जानें। शरीर में विद्यमान पंचकोशों का ज्ञान प्राप्त करे व इनका विवेचन करें। एक 'अन्नमय कोश' जो

त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय अर्थात् पृथिवी के पदार्थों से निर्मित है। दूसरा 'प्राणमय कोश' जिस में 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर जाता? 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, 'उदान' जिस से कण्ठस्थ अन्न पान (उदर में) खेंचा जाता और बल पराक्रम होता है, 'व्यान' जिस से सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा 'मनोमय कोश' जिस में मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पांच कर्म-इन्द्रियां हैं। चौथा 'विज्ञानमय कोश' जिस में बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका, ये पांच ज्ञान-इन्द्रियां जिन से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पांचवां 'आनन्दमय कोश' जिस में प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिक आनन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है, ये पांच कोश कहलाते हैं। इन्हीं से जीव वा मनुष्य सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है। इन पंच कोशों के ज्ञान से सामान्य जन प्रायः अपरिचित हैं। इनके विस्तृत ज्ञान के लिए योगदर्शन आदि दर्शन ग्रन्थ व उन पर प्राचीन व अर्वाचीन आर्यविद्वानों की टीकायें पढ़कर पाठकों को लाभ उठाना चाहिये।

मनुष्य शरीर की तीन अवस्थायें-एक 'जागृत' दूसरी 'स्वप्न' और तीसरी 'सुषुप्ति' अवस्था कहलाती है। तीन शरीर हैं-एक 'स्थूल' जो यह दीखता है। दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन सतरह तत्वों का समुदाय 'सूक्ष्म शरीर' कहलाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इस के दो भेद हैं-एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म

भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। तीसरा शरीर जिस में सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है, वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक वा एक समान है। चौथा तुरीय शरीर वह कहाता है जिस में समाधि को प्राप्त कर मनुष्य वा योगी परमात्मा के आनन्दस्वरूप में मग्न होते हैं। इसी समाधि संस्कारजन्य शुद्ध शरीर का पराक्रम वा प्रभाव मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है। इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द जी ने बहुत गूढ़ ज्ञान प्रस्तुत किया है जिसे पाठकों को बार-बार पढ़ना व समझने का प्रयास करना चाहिये और यथासम्भव साधकों व योगियों से इसकी चर्चा करनी चाहिये।

जीव वा जीवात्मा इन सब कोशों एवं अवस्थाओं से पृथक है। जब मनुष्य की मृत्यु होती है तब प्रायः सभी लोग कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सब का प्रेरक, सब का धर्ता, साक्षीकर्ता व भोक्ता कहलाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्ता व भोक्ता नहीं है तो जानें कि वह मनुष्य अज्ञानी व अविवेकी है। ऐसे लोगों की संगति करने से मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। जीव से इतर व पृथक जो यह सब जड़ वा भौतिक पदार्थ हैं, इन को सुख-दुःख का भोग वा पाप-पुण्य कर्तृत्व कभी नहीं हो सकता। हां, इन जड़ व भौतिक पदार्थों के सम्बन्ध से जीव पाप-पुण्यों का कर्ता और सुख दुःखों का भोक्ता है।-

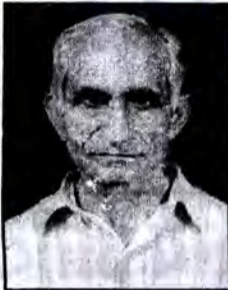
क्रमशः पृष्ठ 8 पर.....

सुखी वै

□ भद्रसेन, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर-146001 # 4398

गतांक से आगे....

सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय और योगाभ्यास ही आत्मा का सबसे उत्तम आहार है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है—प्राणियों की आत्मा आत्मज्ञान और योगाभ्यास से संस्कृत, प्रगतिशील, विकसित होती है। यहाँ विद्या शब्द आत्मज्ञान-आत्मा सम्बन्धी ज्ञान, उससे सम्बन्ध रखने वाले (ध्योरी) सैद्धान्तिक, वैचारिक ज्ञान का वाचक है और तप शब्द प्रकरण के अनुरूप क्रियात्मक प्रैक्टिकल रूप



का वाचक है। तप का अधिकार अर्थ सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों (जोड़ों) का सहन माना जाता है। परन्तु इन सब का सम्बन्ध शरीर से है और यश-अपयश का मन से है। मूलतः यहाँ आत्मा के निखार का प्रकरण है। अतः प्रकरण के अनुरूप तप का अर्थ योगाभ्यास ही है। क्योंकि योग-समाधि-एकाग्रता का आत्मनिखार से सीधा सम्बन्ध है। कुछ स्थलों पर इसके लिए स्वाध्याय=अपने आप को समझने और योग शब्दों का प्रयोग किया है।

योगाभ्यास साधना का विषय है। योग, समाधि, एकाग्रता ये तीनों ही पर्यायवाची शब्द हैं। एकाग्रता के लिए जरूरी है कि व्यक्ति अपना ध्यान अन्य सब ओर से हटाकर एक ओर ही लगाए। जैसे वाहन चालक अपना ध्यान अन्य तरफ से हटाकर अपने लक्ष्य पर लगाता है। तो सभी की यात्रा सुखप्रद हो जाती है। जैसे जब कोई अपना ध्यान एकाग्र करके रुपये गिनता है, तो उसका कार्य विश्वास पूर्वक निश्चिन्त होता है। ऐसे ही योग के अभ्यास से व्यक्ति का मन स्वच्छ, पवित्र, शान्त, सन्तुष्ट, सुखप्रद होता है।

जैसे गहरी नींद में व्यक्ति दुःख, क्लेश, रोग, शोक, चिन्ता, तनाव से दूर रहता है और उठने पर अपने आपको तरोताजा अनुभव करता है। ऐसे ही योग से एकाग्रता साधकर व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक अस्त-व्यस्त, डांवांडोल स्थिति को सुधार लेने पर अशान्त, दुःखी, रोगी, चिन्ताग्रस्त, तनावयुक्त नहीं रहता। कोई पदार्थ, व्यवहार, भाव, स्थिति व्यक्ति के चित्त आदि को अस्त-व्यस्त करके ही उसको अशान्त, चिन्ता, तनाव, रोग, दुःख युक्त करती है। इस अस्त-व्यस्त स्थिति के निवारण, व्यवस्थीकरण को ही योग कहते हैं। निद्रा जैसी एकाग्रता के कारण ही योग को निद्रा से समझाया गया है।

सामाजिक कर्तव्य

26. सामाजिक जीवन—प्रत्येक मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, क्योंकि समाज में ही उसका जन्म और पालन होता है। विश्व स्तर पर देखा जाए, तो हजारों-लाखों ही नहीं, अपितु करोड़ों-अरबों लोग मानव समाज की अन्न, वस्त्र, भवन, चिकित्सा, सुरक्षा, शिक्षा, आवागमन आदि मौलिक एवं दूर-सन्देश, दूर भाष, आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र-व्यवस्था (डाक) सद्ग्रन्थ सहायक तथा सुविधावर्द्धक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हुए हैं। अतः समाज के बिना व्यक्ति न तो जीवित रह सकता है और न ही प्रगति कर सकता है। इसीलिए मनुष्य को परस्पर अपेक्षी सामाजिक प्राणी कहते हैं और सामाजिकता मनुष्य का एक स्वाभाविक गुण है। तभी तो वह अकेले में निराश, हताश, उदास और दुःखी हो जाता है। अकेलेपन में वह भय अनुभव करता है और सामाजिकता में हर एक आशा, उत्साह एवं सुख अनुभव करता है।

सामाजिक और वैयक्तिक जीवन को सुखी बनाने के लिए परस्पर सहयोग एवं सद्भाव की अत्यन्त आवश्यकता होती है तथा यह सब सामाजिक सम्बन्धों की घनिष्ठता पर ही निर्भर है। ये सामाजिक सम्बन्ध तीन प्रकार के होते हैं—पारिवारिक, मित्रवर्गीय तथा कारोबारी। जिसके साथ जिस प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध है। वह सम्बन्ध परस्पर जितनी सच्चाई के साथ होगा, तब दोनों को तथा उनके साथ ही समाज को उतना ही अधिक सुख, शान्ति का अनुभव प्राप्त करने का अवसर और सहयोग प्राप्त होगा।

जैसे कि पति-पत्नी के रूप में धार्मिक-सामाजिक मर्यादा पूर्वक साथ रहने की घोषणा से परिवार का शुभारम्भ होता है। परिवार में माता-पिता, सन्तान, भाई-बहन आदि पारिवारिक जन आते हैं। परिवार में जिसका जिसके साथ जैसा सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध को परस्पर ईमानदारी से निभाने पर ही परिवार का सुख-आनन्द प्रकट होता है।

अतः सामाजिक जीवन को सुदृढ़ बनाने के लिए किसी के काम आना, दूसरों की सहायता करना बहुत आवश्यक है। तभी तो कहा है—

यही है इबादत, यही है दीनों ईमां।
इन्सान के काम आए इंसानं॥
जिसने की इंसान की खिदमत,

विविध सच्ची सोच...

मनुष्य जीवन में उच्चता की तरफ बढ़ना तब प्रारम्भ कर देता है जब उसके विचार सुदृढ़ और संकल्प श्रेष्ठ होते हैं। जब उसे यह समझ में आ जाये कि यह सब कुछ प्रकृति का है, अपना कुछ भी नहीं। इसलिए जो कुछ करना है, वह मानवता की सेवा और रक्षा के लिए करना है। शोषण और सेवा, आसक्ति व विरक्ति, स्वार्थ और जनहित दोनों के धरातल पर अपने व्यक्तित्व से अलग हटकर जिस किसी ने भी मानवता के लिए, राष्ट्रहित के लिए अपना अस्तित्व मिटाकर काम किया है वह सदैव महान बना है। युगों तक ऐसे महान लोगों को पूजा जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि न ही वे रूढ़िवादी होते हैं और न ही साम्प्रदायिक। वह न धर्मनेता होता है और न ही राजनेता। वह एक ऐसा व्यक्ति होता है जो व्यष्टि और समष्टि, दोनों भावों में एक रूप होता है। वह एकरस होता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपकी कोई भी चीज टिकाऊ नहीं है, क्योंकि आप स्वयं टिकाऊ नहीं हैं। आपका निर्माण ही संपूर्ण प्रकृति के अवयवों से हुआ है। जो परमात्मा का दिया हुआ एक अनुदान है। कुछ पल के लिए प्रकृति पुनः उसे अपने में समेटकर विलय कर लेती है।



परन्तु आपका किया हुआ कर्म पुनः उसे प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। नूतन का निर्माण करने में कर्म ही सहयोग करता है, बाकी सभी कुछ अतीत में डूब जाता है।

अपने कर्मों को सुधार कर इसका लेखा-जोखा जरूर करें। अपने झूठे अहंकार को कायम रखने के लिए मानवता का गला न घोटें। इसे ढोकर आप कहाँ ले जायेंगे? जो मेरा दिखता है, वस्तुतः वह मेरा है नहीं। अपनी शक्तियों को जागृत कर स्वयं को पहचानने का प्रयास करें। आज क. मानव कहीं न कहीं भटक गया है। जो भीतर से जगा है, जिसने अपने आपको समझ लिया है वह भटक नहीं सकता है। जो बाहरी दुनिया को सत्य समझता है, वह जल्दी ही टूट जाता है। मनुष्य शरीर में व्यक्ति सेवा कर सकता है। शायद यह देवताओं को भी प्राप्त नहीं। विचारों में परिवर्तन से मनुष्य के व्यक्तित्व में परिवर्तन होता है। व्यक्तित्व में परिवर्तन होने से संस्था और राष्ट्र के नियम एवं प्रणाली में परिवर्तन हो जाता है। इसीलिए धार्मिक गुरुओं और राजनेताओं के विचारों का श्रेष्ठ होना नितान्त जरूरी है, क्योंकि इनके ऊपर ही राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। —महायोगी पायलट बाबा

दुनिया में है इंसान वही।
जो अपना मतलब देखे,
हैवान है वह इंसान नहीं।
किसी के काम जो आये,
उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये,
उसे इंसान कहते हैं॥
परिवार की तरह जब किसी को समाज में सहयोग, सद्भाव प्राप्त होता है। तभी उसका जीवन सुखी होता है। प्रत्येक व्यक्ति जहाँ परस्पर सद्भाव-सहयोग चाहता है, वहाँ वह स्वाभाविक रूप से सम्मान की भी इच्छा रखता है। यह सामाजिक जीने का समान अवसर और सम्मान जब व्यक्ति को पारस्परिक व्यवहार, योगदान, योग्यता के अनुरूप प्राप्त होता है, तो वह अपने आप को सुखी मानता है। पर जब किसी के साथ केवल जाति, धर्म, धन के आधार पर सामाजिक जीने के अवसर और सम्मान में भेदभाव किया जाता है तो सामाजिक संगठन ढीला हो जाता है। तब परस्पर उपजी भिन्नता की भावना घृणा, ईर्ष्या, द्वेष की ओर ही बढ़ती है। अतः बिना किसी कारण के परस्पर भेदभाव एक

अन्याय है और इसको मानना, वर्तना अन्याय का ही समर्थन है। प्रत्येक शिक्षा, संस्कार और अवसर मिलने पर प्रगति कर सकता है। जैसे कि भारतीय नागरिक होने से हम भारतीय समाज के समान सदस्य हैं। सामाजिक सम्बन्ध जहाँ कुछ के साथ पारिवारिक रूप में होते हैं तो कुछ के साथ मित्रता के रूप में होते हैं और कुछ के साथ शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक सहयोगी के रूप में होते हैं। जिससे व्यक्ति का सम्बन्धजितने अंश में सुन्दर, सद्भावपूर्ण होता है, उतने अंश में उस दृष्टि से व्यक्ति अपने आपको सन्तुष्ट अनुभव करता है। इन्हीं सम्बन्धों की घनिष्ठता और शुचिता पर ही हमारा सामाजिक जीवन टिका हुआ है। समाज की व्यवस्था हाथ की अंगुलियों की तरह है जो कि एक-सी नहीं हैं, उनका हाथ में स्थान, क्रम, आकृति, शक्ति भिन्न-भिन्न हैं, पुनरपि वे हर कार्य के समय समस्थिति में आ जाती हैं। ऐसे ही सामाजिक कार्यों और संगठन में सभी को समान अवसर और सम्मान अर्थात् जीवन का अधिकार दिया जाए।
क्रमशः अगले अंक में....

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी दीर्घ आयु तथा श्रेष्ठतमं कर्म

पंचम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

□ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न-373. वानप्रस्थ को क्या करना चाहिए ?

उत्तर-वानप्रस्थ को उचित है कि मैं अग्नि में होम कर दीक्षित होकर व्रत, सत्याचरण और श्रद्धा को प्राप्त होऊँ— ऐसी इच्छा करके वानप्रस्थ होवे। नाना प्रकार की तपश्चर्या, सत्संग, योगाभ्यास, सुविचार से ज्ञान और पवित्रता प्राप्त करे।

संन्यास विधि

प्रश्न-374. संन्यासी कब होवे ?

उत्तर-वनों में आयु का तीसरा भाग अर्थात् 50वें वर्ष से 75वें वर्ष पर्यन्त वानप्रस्थ होके आयु के चौथे भाग में संगों को छोड़कर परिव्राट् संन्यासी हो जावे।

प्रश्न-गृहाश्रम और वानप्रस्थाश्रम न करके सीधा ब्रह्मचर्य आश्रम से संन्यासाश्रम करे तो क्या उसको पाप होता है ?

उत्तर-होता है और नहीं भी होता। होता तब है जब बाल्यावस्था में विरक्त होकर विषयों में फंसे वह महापापी होता है और यदि पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय, विषय भोग की कामना से रहित, परोपकार करने की इच्छा से युक्त पुरुष हो, वह ब्रह्मचर्याश्रम से ही संन्यास लेवे।

प्रश्न-376. कैसा व्यक्ति संन्यास में लेवे ?

उत्तर-जो दुराचार से पृथक् नहीं, जिसको शान्ति नहीं, जिसका आत्मा योगयुक्त नहीं और जिसका मन शान्त नहीं, वह संन्यास ले के भी प्रज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न-377. संन्यासी किन गुणों को ग्रहण करे ?

उत्तर-संन्यासी बुद्धिमान् होके वाणी और मन को अधर्म से रोके, उनको ज्ञान और आत्मा में लगावे और उस ज्ञान, स्वात्मा को परमात्मा में लगावे और उस विज्ञान को शान्तस्वरूप आत्मा में स्थिर करे।

प्रश्न-378. संन्यासी किन का संग छोड़ देवे ?

उत्तर-जो अविद्या के भीतर खेल रहे अपने को अहंकारपूर्वक धीर और पण्डित मानते हैं, जो बहुधा अविद्या में रमण करने वाले बालबुद्धि 'हम कृतार्थ हैं' ऐसा मानते हैं, जिनको केवल कर्मकाण्डी लोग राग से मोहित होकर नहीं जान और जना सकते, वे नीच गति को जाने हारे जन्म-मरण रूप दुःख में गिरे रहते हैं। संन्यासी ऐसों का संग

छोड़ देवे।

प्रश्न-379. संन्यासी किस स्थिति में मुक्ति-सुख को प्राप्त होता है ?

उत्तर-जो परमेश्वर-प्रतिपादक वेदमन्त्रों के अर्थ, ज्ञान और आचार में अच्छे प्रकार निश्चित संन्यास योग से शुद्ध अन्तःकरणपूर्वक संन्यासी होते हैं, वे ही परमेश्वर में मुक्ति-सुख को प्राप्त करते हैं।



प्रश्न-380. किसको सांसारिक सुख-दुःख प्राप्त नहीं होता ?

उत्तर-जो देहधारी है वह सुख-दुःख प्राप्ति से पृथक् कभी नहीं रह सकता और जो शरीररहित जीवात्मा मुक्ति में सर्वव्यापक परमेश्वर के साथ शुद्ध होकर रहता है तब उसको सांसारिक सुख-दुःख प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न-381. संन्यासी लोग रात दिन किन साधनों में तत्पर रहते हैं ?

उत्तर-लोक में प्रतिष्ठा व लाभ, धन से भोग व मान्य, पुत्रादि के मोह से अलग होकर संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात-दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहते हैं।

प्रश्न-382. मुक्ति का आनन्द-स्वरूप लोक (सुख) किस को प्राप्त होता है ?

उत्तर-परमेश्वर की प्राप्ति के अर्थ यज्ञ करके, उसमें यज्ञोपवीत शिखादि चिह्नों को छोड़ आहवनीय पाँच अग्नियों को प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान—इन पाँचों प्राणों में आरोपित करके, सब प्राणियों को अभयदान देकर, घर से निकलकर ब्राह्मण=ब्रह्मवित् होकर वेदोक्त धर्मादि विद्याओं का प्रकाश और उपदेश करने वाले संन्यासी को मोक्ष-सुख की प्राप्ति होती है।

प्रश्न-383. सब मनुष्यमात्र का क्या धर्म है ?

उत्तर-धर्म तो पक्षपातरहित न्याय आचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों अर्थात् सब मनुष्यमात्र का एक ही है।

प्रश्न-384. संन्यासियों के विशेष धर्म और व्यवहार क्या हैं ?

उत्तर-1. जब संन्यासी मार्ग में चले, तब इधर-उधर न देखकर, नीचे पृथ्वी पर दृष्टि रखकर चले। सदा वस्त्र से छान के जल पीये, निरन्तर सत्य ही बोले, सर्वदा मन से विचार के सत्य का ग्रहण कर असत्य को छोड़ देवे।

क्रमशः अगले अंक में.....

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोदस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ (यजु० 40.2)

पदार्थ-मनुष्य (इह) इस संसा! में (कर्माणि) धर्मयुक्त वेदोक्त कर्मों को (कुर्वन्) करता हुआ (एव) ही (शतम्) सौ (समाः) वर्ष (जिजीविषेत्) जीवन की इच्छा करे (एवम्) इस प्रकार धर्मयुक्त कर्म में प्रवर्तमान (त्वयि) तुझ (नरे) व्यवहारों को चलाने हारे जीवन के इच्छुक होते हुए (कर्म) अधर्मयुक्त अवैदिक काम्य कर्म (न) न हों (लिप्यते) लिप्यत होता (इतः) इससे जो और प्रकार से (न, असि) कर्म लगाने का अभाव नहीं होता है।

भावार्थ-उपरोक्त वेदमंत्र श्रेष्ठतम कर्मों को करते हुए सौ वर्ष का दीर्घ जीवन जीने की इच्छा धारण करने का आदेश कर रहा है। जीवन भर प्रशंसा योग्य अत्यन्त श्रेष्ठ कर्मों को करो। इस प्रकार न नर के लिए कर्मों का लेप नहीं लगता अर्थात् मनुष्य को कर्म नहीं बांधते हैं।

प्रश्न-परमात्मा ने मनुष्य को जीवन भर श्रेष्ठ वैदिक कर्म करने का आदेश क्यों किया है ?

उत्तर-आत्मा ही जीवात्मा या जीव है। आत्मा का अर्थ है 'सतत प्रयत्न करने वाला' आत्मा में सतत प्रयत्नशीलता का गुण है। अपनी परिपूर्ण उन्नति होने तक प्रमाद न करते हुए प्रयत्न करते रहना, यह आत्मा का निज स्वभाव है। कर्म का रहस्य अत्यन्त गूढ़ एवं गंभीर है। सब धर्मशास्त्र जीव को सत्कर्म करने

की आज्ञा देते हैं। कर्म का तत्त्व बताते हुए कहा है कि—

यज्ञो वै कर्म। श०ब्रा० 'पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति, पापः पापेनेति' यज्ञ ही कर्म है, जो मनुष्य को करना चाहिए। पुण्य कर्म करने से मनुष्य पवित्र बनता है और पाप कर्म करने से पापी बनता है अर्थात् जो जैसा कर्म करता है वैसा ही बनता चला जाता है। इसलिये दक्षता से कर्म करने चाहियें।

वेद कहता है—

देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे, आप्यायध्वं, अनमीवम् अयक्ष्माः, मा वः स्तेन ईशत, मादघशंसः ॥ (यजु० 1/1)

हे मनुष्य लोगो! जो सब जगत् की उत्पात्ति करने वाला, सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त, सब सुखों को देने वाला परमात्मा हम सब को अति उत्तम करने योग्य सर्वोपकारक यज्ञादि कर्मों के लिए अच्छी प्रकार संयुक्त करे जिससे हम सब उन्नति को प्राप्त हों तथा व्याधि और यक्ष्मा रोग से दूर रहें। आपकी कृपा से हमें दुःख देने के लिए कोई पापी, चोर, डाकू उत्पन्न न हो।

यह सब तभी सम्भव है जब हम सब मिलकर श्रेष्ठतम कर्म करेंगे। वैदिक धर्म व्यक्ति, समाज और राष्ट्र ही नहीं वरन् संसार की उन्नति करने का आदेश देता है अर्थात् संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख उद्देश्य है। क्रमशः

—देवराज आर्य, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, आर्य टेंट हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द (हरयाणा)

प्रवेश परीक्षा 28 मार्च तथा 3 अप्रैल

गुरुकुल भैयापुर लाड़ौत रोड रोहतक (स्थापना सन् 1991)

- मान्यता सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली नं० 531114 प्रोस्पेक्ट्स उपलब्ध।
- प्रवेश कक्षा 4 से 10+2 तक, पूर्णतः आवासीय (होस्टल), छः एकड़ का रमणीय परिसर, खेलों के अनेक संस्थान।
- विश्व स्तर की आधुनिक तथा प्राचीन शिक्षा का समन्वय, योग, प्राणायाम और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
- राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ओलम्पियाड तथा किशोर वैज्ञानिक तथा NDA की 5वीं से ही तैयारी। 10+2 नॉन मेडिकल कॉमर्स एवं आर्ट तथा सभी प्रयोगशालाएं।
- गृहकार्य होमवर्क के लिए वातानुकूलित विशाल लाइब्रेरी। सी.सी.टी.वी. कैमरे।
- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- दुग्ध हेतु निजी गोशाला और आवश्यक सामान हेतु कैंटीन।

मो० : 01262-217550, 7027700947, 7027700950, 9416629972

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

स्वास्थ्य-चर्चा... चर्मरोग से बचने के घरेलू उपाय

चर्म रोग आपको कई तरह की परेशानियां हो सकती हैं। बारिशों और गर्मी के मौसम में इस तरह की समस्याएं अधिक होती हैं। ऐसे में त्वचा का बचाव करना बहुत जरूरी होता है। नहीं तो चर्म रोग होने की संभावना ज्यादा होती है। आइए, हम आपको चर्म रोग से बचने के कुछ घरेलू उपाय के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

चर्म रोग से बचने के घरेलू उपचार गेंदा

गेंदा गहरे पीले और नारंगी रंग का फूल होता है। यह त्वचा की समस्याओं का प्रभावशाली घरेलू उपाय है। यह छोटे-मोटे कट, जलने, मच्छर के काटने, रूखी त्वचा और एक्ने आदि के लिए शानदार घरेलू उपाय है। गेंदे में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-वायरल गुण होते हैं। यह सूजन को कम करने में भी मदद करता है। इसके साथ ही गेंदा जख्मों को जल्दी भरने में मदद करता है। यह हर प्रकार की त्वचा के लिए लाभकारी होता है। गेंदे की पत्तियों को पानी में उबालकर उससे दिन में दो-तीन बार चेहरा धोने से एक्ने की समस्या दूर होती है।

कैमोमाइल/ बबूने का फूल

कैमोमाइल का फूल त्वचा पर लगाने से जलन को शांत करता है और साथ ही अगर इसका सेवन किया जाए तो आंतरिक शांति प्रदान करता है। इसके साथ ही यह केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली पर भी सकारात्मक असर डालता है। यह एक्जिमा में भी काफी मददगार होता है। इसके फूलों से बनी हर्बल टी का दिन में तीन बार सेवन आपको काफी फायदा पहुंचाता है। इसके साथ ही एक्जिमा और सोरायसिस जैसी बीमारियों से उबरने में भी यह फूल काफी मदद करता है। एक साफ कपड़े को कैमोमाइल टी में डुबोकर उसे त्वचा के संक्रमित हिस्से पर लगाने से काफी लाभ मिलता है। इस प्रक्रिया को पंद्रह-पंद्रह मिनट के लिए दिन में चार से छह बार करना चाहिए। कैमोमाइल कई अंडर-आई माश्चराइजर में भी प्रयोग होता है। इससे डार्क सर्कल दूर होते हैं।

कमफ्रे

इस फूल के पत्ते और जड़ें सदियों से त्वचा संबंधी रोगों को ठीक करने में इस्तेमाल की जाती रही हैं। यह कट, जलना और अन्य कई जख्मों में काफी लाभकारी होता है। इसमें मौजूद तत्वा द्वारा काफी तेजी से अवशोषित कर लिए जाते हैं। जिससे स्वस्थ कोशिकाओं का निर्माण होता है। इसमें त्वचा को आराम

पहुंचाने वाले तत्व भी पाए जाते हैं। अगर त्वचा पर कहीं जख्म हो जाए तो कमफ्रे की जड़ों का पाउडर बनाकर उसे गर्म पानी में मिलाकर एक गाढ़ा पेस्ट बना लें। इसे एक साफ कपड़े पर फैला दें। अब इस कपड़े को जख्मों पर लगाने से चमत्कारी लाभ मिलता है। अगर आप इसे रात में बांधकर सो जाएं, तो सुबह तक आपको काफी आराम मिल जाता है। इसे कभी भी खाया नहीं जाना चाहिए, अन्यथा यह लिवर को नुकसान पहुंचा सकता है। गहरे जख्मों पर भी इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इससे त्वचा की ऊपरी परत तो ठीक हो जाती है, लेकिन भीतरी कोशिकायें पूरी तरह ठीक नहीं हो पातीं।

अलसी के बीज

अलसी के बीजों में ओमेगा थ्री फैटी एसिड होता है जो हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करता है। इसमें सूजन को कम करने वाले तत्व मौजूद होते हैं। यह स्किन डिस्ऑर्डर, जैसे एक्जिमा और सोरायसिस को भी

■ एक्जिमा, सोरायसिस आदि कई प्रकार का हो सकता है चर्म रोग।

■ बारिशों में अधिक परेशान कर सकते हैं त्वचा संबंधी रोग।

■ गेंदे का फूल त्वचा संबंधी रोगों में होता है बहुत लाभकारी।

■ कैमोमाइल का उपयोग त्वचा को जलन से देता है राहत।

ठीक करने में मदद करता है। दिन में एक-दो चम्मच अलसी के बीजों के तेल का सेवन करना त्वचा के लिए काफी फायदेमंद होता है। बेहतर रहेगा कि इसका सेवन किसी अन्य आहार के साथ ही किया जाए।

अन्य उपाय

हल्दी, गाल चंदन, नीम की छाल, चिरायता, बहेडा, आंवला, हरेडा और अडूसे के पत्ते को एक समान मात्रा में लीजिए। इन सभी सामानों को पानी में पूरी तरह से फूलने के लिए भिगो दीजिए। जब ये सारे सामान पूरी तरह

से फूल जाएं तो पीसकर ढीला पेस्ट बना लीजिए। अब इस पेस्ट से चार गुना अधिक मात्रा में तिल का तेल लीजिए।

तिल के तेल से चार गुनी मात्रा में पानी लेकर सारे सामानों को एक बर्तन में मिला लीजिए। उसके बाद मिश्रण को मंद आंच पर तब तक गर्म करते रहिए जब तक सारा पानी भाप बनकर उड़ ना जाए। इस पेस्ट को पूरे शरीर में जहां-जहां खुजली हो रही हो वहां पर या फिर पूरे शरीर में लगाइए। इसके लगाते रहने से आपके त्वचा से चर्म रोग ठीक हो जाएगा।

एग्जिमा, सोरियासिस, मस्सा, ल्यूकोईडमा, स्केबीज या खुजली चर्म रोग के प्रकार हैं। किसी भी प्रकार का चर्म रोग जब तक ठीक नहीं हो जाता है, बहुत कष्टदायक होता है। जिसके कारण से आदमी मानसिक रूप से बीमार हो जाता है। चर्म रोग की समस्या होने पर आप चिकित्सक से सलाह ले सकते हैं।

शरीर की हर तकलीफ को दूर करती सहजन

प्रकृति के कोष में कितने अमूल्य पदार्थों का भण्डार है, मनुष्य के हर दुःख का इलाज प्रकृति के पास है, आयुर्वेद इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कहा जा सकता है, जो सदियों से मनुष्य की हर तकलीफ का इलाज करता है। प्रकृति के उन्हीं उपलब्ध अमूल्य कोषों में एक है सहजन।

सहजन के कुछ लाभ—

1. सहजन में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नेशियम, विटामिन-ए-सी-बी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
2. सहजन की फली का साक, अचार, चटनी बनाए जाते हैं जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्यरक्षक भी होते हैं, जिस जमीन पर यह उगता है वहाँ की जमीन भी उत्तम हो जाती है।
3. इसकी छाल का काढ़ा बनाकर शहद मिलाकर लेने से वातरोगों में और कफ विकारों में लाभ करता है।
4. इसकी पत्तियां उबाल कर काढ़ा बनाकर पीने से गठिया, लकवा तथा अन्य वातरोगों में लाभकारी होता है।
5. इसकी पत्तियों को पीसकर लुगदी बनाकर सरसों के तैल में पकाकर बांधने से मोच में आराम मिलता है।
6. इसके पत्तों को ताजा रस कान में टपकाने से कान दर्द में आराम

7. इसकी सब्जी खाने से पथरी निकल जाती है।
8. इसके पत्तों का रस आयु तथा मात्रानुसार देने से बच्चों के पेट के कीड़ों का नाश होता है। इसकी पत्तियों का रस पीने से मोटापा धीरे-धीरे कम हो जाता है।
9. सहजन की फली का रस सुबह-शाम लेने से उच्च रक्तचाप में आराम मिलता है तथा पत्तियों को पीसकर घाव पर लगाने से वह ठीक हो जाता है तथा सूजन में लाभ मिलता है।
10. पानी को शुद्ध, साफ करने के लिए इसके बीजों को पीसकर पानी में

11. सहजन की छाल का काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से दांत के दर्द में आराम मिलता है तथा कीड़े नहीं लगते हैं।
12. इसके कोमल पत्तों की सब्जी खाने से हर प्रकार की कब्ज दूर होती है।
13. इसके पत्ते का लेप सिर पर तथा बीज घिसकर सुंघाने से सिरदर्द में आराम मिलता है।
14. इसका रस गर्भवती महिला को देना हितकारी होता है। प्रसव के समय होने वाली पीड़ा से बचाव करता है।
15. इसकी सब्जी खाने से बुढ़ापा दूर रहता है तथा आँखों की रोशनी लम्बे समय तक बनी रहती है।

स्वास्थ्य के लिए उपयोगी

1. भोजन के बाद कुल्ला करके मुँह साफ करना उचित है। दांतों में अन्न रहने से पायरिया आदि रोग हो जाते हैं।
2. चलते-फिरते और दौड़ते समय एवं अशुद्ध जगह में खाना-पीना नहीं चाहिए।
3. भोजन से पहले हो सके तो स्नान करना चाहिए।
4. मांसाहारी भोजन हमारे सात्त्विक विचारधारा के लिए उचित नहीं है, इसलिए शाकाहारी भोजन को प्राथमिकता दें।
5. लैमनेड, सोडा और बर्फ का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
6. नशीले एवं उत्तेजक पदार्थों का सेवन कदापि न करें, इससे भयंकर रोगों के शिकार हो जाते हैं।
7. बाजार में हुई वस्तुएं जैसे-चाट, मलाई, छोले-भटूरे, पकौड़ी, कचौड़ी अधिक खाने से बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। हो सके तो कम से कम ऐसा करें।

जीवन विचारों से निर्मित एक स्वभाव

गतांक से आगे....

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ. एरिस का मानना है कि यदि मनुष्य का सूक्ष्म शरीर अर्थात् मन का दृढ़ संकल्प, दृढ़ इच्छाशक्ति दृढ़ होती है तो विषैले से विषैले जीवाणु नष्ट हो सकते हैं?

महान् नाटककार शैक्सपीयर का कहना है—'हमारे विचारों की अनुकूलता या प्रतिकूलता ही हमारे जीवन की सफलता, असफलता, प्रसन्नता, अप्रसन्नता, क्रोध, तिरस्कार, प्रेम, सम्मान, सहयोग और असहयोग का कारण होता है।'

रामायण में भी कहा गया है—'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।'

मस्तिष्क मानव की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। मस्तिष्क के दो स्तर होते हैं, एक वह जो तर्क शक्ति वाला होता है, दूसरा वह जो अतार्किक शक्ति वाला होता है। तार्किक स्तर वह है जो 'विचार' के प्रत्येक पहलू को जानने, सोचने, समझकर बुद्धि द्वारा लिये गये निर्णय को क्रियान्वित करता है।

अतार्किक स्तर वह है जिसको सोचना समझना नहीं पड़ता अर्थात् जीवन की प्रत्येक दैनिक क्रियायें यथावत चलती हैं जिसे दूसरे शब्दों में हम आदत भी कह सकते हैं।

मस्तिष्क के इन दो भागों को विभिन्न शास्त्रों में अलग-अलग नाम दिये हैं।

जैसे वेद में—सूक्ष्म शरीर व स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर द्वारा चित्त में संस्कार बनना तथा स्थूल शरीर द्वारा सहज क्रियाओं को करना।

उपनिषद् में—जाग्रत अवस्था तथा सुषुप्ति अवस्था।

चिकित्सीय पद्धति में—बृहद् मस्तिष्क, दूसरा लघु मस्तिष्क।

योगशास्त्र में—आत्मा और चित्त। मनोविज्ञान में—चेतन मस्तिष्क और अचेतन मस्तिष्क।

इनके साथ एक अन्य स्तर भी है जो इन दोनों को जोड़ता है। वेद में कारण शरीर जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार वर्तमान शरीर में लाता है।

उपनिषद् की तुरीय अवस्था यही कार्य करती है। चिकित्सकीय पद्धति में यह कार्य दोनों मस्तिष्क का जोड़ जिसे सुषुम्णा शीर्षक कहा जाता है। योग शास्त्र में 'ब्रह्मरन्ध्र' कहलाता है तथा मनोविज्ञान में 'अर्द्ध चेतन'

□ श्रीमती मनीषा विमल

कहलाता है। नाम की दृष्टि से या व्याख्या की दृष्टि से सब अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु मन में उठे विचारों की दृष्टि से तीन प्रकार से कार्य होता है।

1. क्रियाशक्ति-शरीर व इन्द्रियों द्वारा किया गया कार्य।

2. ज्ञानशक्ति-बुद्धि द्वारा लिया गया व तर्क-वितर्क के द्वारा निर्णय।

3. इच्छाशक्ति-विचारों की दृढ़ता जिसके द्वारा हर सम्भव असम्भव कार्य करने की शक्ति मिलती है, जिसे आत्मा की दिव्य दृष्टि कहते हैं, इसके लिए गीता में भी कहा गया है—'केनापि देवेन हृदिस्थतेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि' मेरे हृदय में बैठा देव मुझे चला रहा है, वह जैसा कहता है मैं वैसा ही करता हूँ।

सामवेद में कहा गया है—'परिस्वानास इन्दवो मदाय वहर्णा गिरा मधो अर्षन्ति धारया।' उत्तम प्राणशक्ति का संचार करने वाले 'इन्दवो' (दिव्यशक्ति) हमारे सारे शरीर को शक्ति देने वाले ज्ञान प्राप्त कराने वाले हमें उल्लासित व आनन्दित करते हैं।' अर्थात् हमारा मन व विचार असीमित व अद्भुत क्षमता वाला है। यह मन हमारे विचारों को लक्ष्य की ओर ले जाएगा। इसके लिये विश्वास, आस्था, ध्यान, लगन (पैशन) की आवश्यकता है। क्योंकि अटूट विश्वास और लगन रखने से अचेतन मन बिना किसी तर्क के उसको पूरा करने में लग जाता है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है कोई जादू-टोना नहीं है। इसका आधार इस उदाहरण से समझा जा सकता है।

मान लीजिये हमारा मन एक बगीचा है। उसमें विचारों के बीज बो दिये। वह बीज चेतन मन के द्वारा ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़ा, सेवा-सुश्रुषा, आलोचना, प्रेम, स्नेह, लोभ आदि विचार बीज के रूप में डल गये, उनमें से कुछ चेतन द्वारा दैनिक जीवन में पूरे हो गये और कुछ अचेतन में चले गये। चेतन मन द्वारा दिये गये विचारों के बीज जो सृजनात्मक और सौहार्द्रपूर्ण होते दृढ़ संकल्प से जुड़े होते हैं वह बिना तर्क के अप्रत्यक्ष रूप से क्रियान्वित हो जाते हैं। अच्छे ही नहीं बुरे विचार भी अपना लक्ष्य

पूरा करने में सफल हो जाते हैं। मान लीजिये आपके मन में विचार उठा कि मुझे अमुक व्यक्ति की हत्या करनी है तो आप परिणाम सोचे बिना हत्या जैसा जघन्य कृत्य भी कर डालेंगे।

सच्चाई यह है कि मस्तिष्क के चेतन और अचेतन स्तरों के बीच ऐसी सामंजस्य पूर्ण प्रक्रिया है जिसे हम किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैज्ञानिक तरीके से निर्देशित करते हैं। यह हमारे हृदय की गहराइयों से निकली प्रार्थना के रूप में वह तरंग है जो ब्रह्माण्ड से जोड़ देती है और उसकी शक्ति जिसे ईश्वर या अद्भुत क्षमता कह सकते हैं वह शरीर में आ जाती है। उसी के अनुसार मनुष्य की मानसिक, शारीरिक व आत्मिक स्थिति बन जाती है। अपनी प्रबल विचारशक्ति से ही बाहरी परिस्थिति को बदल सकते हैं। यह ईश्वरीय तरंग संघर्ष व पुरुषार्थ करने की क्षमता देती है।

मनुष्य का हर विचार एक कारण और उसकी परिस्थिति पर निर्भर होता है। उसका परिणाम-उसके लक्ष्य की पूर्ति होती है। जैसे विचार व भाव होते हैं उसी के अनुसार अचेतन मन में संस्कार बन जाते हैं। अपनी सकारात्मक या नकारात्मक विचारों के द्वारा ही निर्णय लेते हैं, इसको एक प्रयोग द्वारा स्पष्ट कर दूँ।

मान लीजिये एक व्यक्ति नकारात्मक सोच वाला है तो साधारण खांसी के धसके से पीड़ित होने पर वह अपने अन्दर 'टी.बी.' के कीटाणुओं के होने की कल्पना कर लेगा। धसका उठते ही उसके मन में विचार आयेगा कि टी.बी. का पहला लक्षण खांसी है। अब मुझे बुखार भी हो गया है। छाती में भी दर्द है, मुझे टी.बी. हो गई और वैसा ही वह अनुभव करने लगेगा। कितनी बार तो यह विचार परिणाम में भी बदल जाता है। वास्तव में उसमें टी.बी. के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

दूसरी ओर आशावादी दृष्टिकोण वाले व्यक्ति अपने जीवन को खुशहाल बना लेते हैं। इसका उदाहरण एक सत्य घटना बताकर दे रही हूँ—एक व्यक्ति अपने सिर में दर्द उठने पर डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर ने उसकी स्थिति देखकर सब टेस्ट किये और बताया कि आपको ब्रेन ट्यूमर है, वह भी लगभग अन्तिम स्थिति में, उसने

डॉक्टर से पूछा अभी मेरे पास कितना समय है? डॉक्टर ने सकुचाते हुए बताया कि अधिक से अधिक छह माह। वह बहुत खुश हुआ और बोला धन्यवाद डॉक्टर साहब। जो कुछ दवाएं वगैरह लेनी थी वह ले ली। वह एक फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर था, आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, बस व्यवसाय से सब खर्च ठीक प्रकार चलता था, घर आकर सबसे पहले उसने अपनी पत्नी को अपने व्यवसाय की सारी जानकारी करानी शुरू की। वह लगभग तीन माह में पारंगत हो गई। उसे स्वतंत्र व्यवसायी बना दिया। फिर एक दिन अपने सब रिश्तेदारों को बुलाकर खूब शान से अपना जन्म दिन मनाया। उसके बाद अपनी पत्नी को अपनी बीमारी के बारे में बताया तथा कहा कि अब तुम किसी पर आश्रित नहीं रहोगी, बच्चों की परवरिश भी अच्छी तरह कर सकोगी, इसीलिए तुम्हें मैंने सब काम सिखा दिया है। मैं बहुत खुशानसीब हूँ जो मुझे पहले मालूम हो गया, अब शेष जीवन अच्छी तरह जीना चाहता हूँ।

यह अन्तर होता है आशावादी और निराशावादी दृष्टिकोण का, विचारों का। आशावादी विचार मनुष्य को जीवन की हर परिस्थिति को सहने की क्षमता देता है तभी तो वेद मन्त्र भी कहता है—'त्वमसि सहमानोऽहस्मि सहस्वान्' तू तो सहने वाला है ही अर्थात् 'ईश्वर' किन्तु मैं भी सहने वाला हूँ, अर्थात् मनुष्य।

शास्त्र कहते हैं जीवन का नियम-दृढ़ विश्वास और यही विश्वास मस्तिष्क का एक सकारात्मक विचार है। जो मानव को परिस्थितियों के अनुसार संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं तथा रास्ता सुझा देते हैं। सारी समस्याओं का समाधान हमारी विचारशक्ति ही है। कोई कहे कि सृष्टि का सबसे बड़ा रहस्य क्या है? विज्ञान की अद्भुत खोज?, परमाणु अस्त्र, अन्तरिक्ष यान या ब्लैक होल, टेस्ट ट्यूब बेबी? नहीं। सृष्टि का सबसे बड़ा रहस्य है, मानव के अन्दर निहित अद्भुत व विलक्षण शक्ति, वह प्रतिभा जो विचारों के रूप में उद्भूत होती है और कर्म के रूप में परिलक्षित होती है। जो अचेतन मन, दृढ़संकल्प वाले मन के द्वारा हर परिस्थिति को रास्ता बताती है।

क्रमशः पृष्ठ 6 पर....

बड़सरा गौत्र ने कराया गांव अलखपुरा में सद्भावना हवन



हांसी, 21 मार्च : समूचे प्रदेश भर के बड़सरा समाज के लोगों ने गांव अलखपुरा में इकट्ठे होकर सद्भावना हवन का आयोजन किया। जिसमें हांसी नगर के वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामसुफल शास्त्री एवं ज्ञानचन्द्र शास्त्री ने पवित्र वेदमंत्रों द्वारा हवन यज्ञ में आहुतियां दिलाकर सभी लोगों से भाईचारा एवं सद्भावना बनाए रखने की अपील की। संगठन के प्रधान कृष्ण कुमार ने बताया कि मुख्य यजमान सतवीर सिंह, राजेश सिंह, मुलकराज सिंह एवं जगदीश सिंह थे। यज्ञोपरांत आचार्य रामसुफल शास्त्री ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते

हुए कहा कि भाईचारा समाज की सबसे बड़ी ताकत है। भाईचारे को मजबूत एवं संगठित बनाए रखें। आचार्य प्रवर ने परमपिता परमात्मा से वेदमंत्रों द्वारा प्रार्थना की कि विगत दिनों आरक्षण के दौरान बिगड़े भाईचारे का संतुलन पुनः संतुलित हो और समाज में सुख-शान्ति का माहौल बने।

इस अवसर पर प्रधान बलवंत सीसर, जोगिन्द्र रोशन खेड़ा, सत्यवान, नसीब सिंह वकील, अत्तर सिंह, भीम सिंह, सुन्दर सिंह, धारासिंह, भगवान सिंह, नरेन्द्र सिंह, पतराम सिंह, सज्जन सिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

श्री सोमनाथ आर्य दिवंगत

श्रद्धेय मा० सोमनाथ आर्य एक प्रमुख समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता, शालीनता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे। उनका जन्म 6 जनवरी 1943 में डेरागाजी खाँ (पाकिस्तान) में हुआ था। उनके पिता शिक्षाविद् थे तथा मा० सोमनाथ जी दिल्ली में अध्यापक रहे।



31 जनवरी 2003 में सेवानिवृत्त होने के बाद उनका केवल कार्य आर्यसमाज एवं आर्यसमाज की संस्थाओं को आगे ले जाना रहा। उन्होंने आर्य केन्द्रीय सभा को नया नेतृत्व दिया। वर्षों तक आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री एवं मृत्युपर्यन्त आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, आर्यसमाज अर्जुन नगर गुड़गांव के 16 वर्षों तक प्रधान रहे।

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय के वर्षों तक महामन्त्री एवं अन्त में वरिष्ठ उपप्रधान, वैदिक कन्या वरिष्ठ विद्यालय के उपप्रधान, आर्य एजुकेशन सोसायटी के प्रधान अन्तिम समय तक रहे। वे हमेशा मुस्कराते हुए दयानन्द के कार्यों को करते रहते थे। दयानन्द के प्रचार को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए वे आर्य यात्रायें भी आर्यजनों को करवाते थे। हर वर्ष टंकारा की आर्यजनों की बस लेकर जाते थे। उनके निधन से गुड़गांव की पूरी जनता दुःखी है। उनकी श्रद्धांजलि सभा में हजारों की संख्या इस बात की परिचायक थी।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे संत को अपने चरणों में स्थान देवे। उनकी कमी वर्षों तक खलेगी। इनके परिवार में बेटा विकास आर्य, बेटा मंजु एवं आशु सचदेवा को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है। -लक्ष्मण पट्टा, मंत्री आर्यसमाज अर्जुननगर, एवं कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

जीवन विचारों से निर्मित एक.... पृष्ठ 5 का शेष.....

मनुष्य को मिलने वाला यश, सम्पत्ति, कीर्ति समस्त सुख सुविधा के साधन का आधार मनुष्य की सोच ही है, विचार ही है। बचपन में एक कहानी सुनी थी, तीन मित्र घर से रोजगार प्राप्त करने के लिए निकले उन्होंने आपस में वार्तालाप किया कि किसको क्या चाहिये? एक बोला- 'बस मेरी तो यही इच्छा है कि आराम से रहने खाने लायक धन मिल जाये।' दूसरा बोला- 'मैं चाहता हूँ मेरे पास रहने को आलीशान बंगला हो और चांदी के बर्तन में भोजन करूँ।' तीसरा बोला- 'मैं चाहता हूँ कि मैं सोने के बर्तनों में मनपसंद भोजन करूँ, मेरे पास नौकर-चाकर व रहने को आलीशान घर हो।' कुछ वर्ष बाद जब तीनों एक बार मिले तो उन्हें अपना-अपना लक्ष्य मिल चुका था, पहला साधारण जीवन जी रहा था। दूसरा समृद्ध व्यापारी बन गया और तीसरा एक छोटे से राज्य का राजा बना था।

सार यही है कि मनुष्य अपनी विचार शक्ति के आधार पर ही संघर्ष करता है तथा परिणाम प्राप्त करता है। हमारा मन एक योग्य वैज्ञानिक भी है और एक योग्य चिकित्सक भी। इतिहास गवाह है अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर ही पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल जे० कलाम एक मछुवारे के पुत्र होकर भी अणुबम के संस्थापक, बहुत बड़े वैज्ञानिक बने। लालबहादुर शास्त्री गरीब के घर पैदा हुए लेकिन देश के प्रधानमंत्री बने। आज भी हमारे प्रधानमंत्री मोदी चाय बेचने वाले से प्रधानमंत्री तक पहुंचे और बहुत से उदाहरण आज भी हमारे सामने आते हैं। अभी उन्तीस दिसम्बर को जब प्रधानमंत्री एक 'अम्बेडकर सभा' में भाषण दे रहे थे एक महिला 'कल्पना सरोज' का इंटरव्यू आया, उस दलित महिला ने 14 वर्ष की आयु से संघर्ष किया क्योंकि एक तो वह दलित समाज से थी दूसरा उसका कोई आर्थिक साधन जीवनयापन का नहीं था। वह चौदह वर्ष की आयु में विधवा हो गई थी। यहाँ तक कि आत्महत्या का

प्रयास भी किया, तब भी समाज ने यह कहकर प्रताड़ित किया कि कोई गलत काम किया होगा। इसके पश्चात् उसने अपनी शर्तों पर जीवन यापन का विचार किया। बहुत प्रकार संघर्ष झेलकर अपने पुरुषार्थ, बुद्धि व प्रबल विचारशक्ति से वह बीस वर्षों में बम्बई की एक कमानि कम्पनी की डायरेक्टर बन गई।

किसी ने सही कहा है कि 'खजाना हमारे भीतर है आवश्यकता है दृढ़ इच्छाशक्ति और विचारशक्ति से उसे खोजने की। राह अपने आप खुल जायगी, फिर वह चाहे बिहार के दशरथ मांझी का पत्थर काटकर सड़क बना देने का क्यों न हो या प्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चन्द्रन जिन्होंने टांग कट जाने पर भी नाचे मयूरी पिक्चर में लकड़ी की टांग से अद्भुत नृत्य किया।'

हमार विचारशक्ति जब प्राणशक्ति से मिल जाती है अर्थात् अन्तःकरण की गहराइयों में जब कोई विचार आता है तब वह उसी प्रकार क्रियान्वित है जैसे आधुनिक युग में मोबाइल, टी.वी., कम्प्यूटर के माध्यम से हम अपना मनपसंद प्रोग्राम देखते हैं।

हमारे विचार हमें समाज से जोड़ते हैं। हमें अपनी उन्नति स्वयं ही करनी है। वेदमन्त्र कहता है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' हे ईश्वर हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चल, ईश्वर पर श्रद्धा व विश्वास रखने से एक रास्ता बन्द होने पर दूसरा स्वतः ही खुल जाता है। मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा है। अनेक बार असमय ही ऐसी परिस्थिति आती है कि मनुष्य विचार शून्य हो जाता है। यही वह समय है जब अपने अन्दर की योग्यता को मानव परख सकता है और अपनी विचारशक्ति की दृढ़ता से अपने जीवन की दशा व दिशा बदलकर समाज में अपना स्थान बना लेता है और यह विचारशक्ति उसका स्वभाव बन जाता है।

संपर्क-2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार 9760618162

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

- | | |
|--|---------------------|
| 1. आर्यसमाज घरौंडा (करनाल) | 1 से 3 अप्रैल 2016 |
| 2. आर्यसमाज गुढ़ा रोड, गोहाना, जिला सोनीपत | 8 से 10 अप्रैल 2016 |
| 3. आर्यसमाज भुरथला, जिला रेवाड़ी | 7 से 8 मई 2016 |

—सभामन्त्री

आर्य-संसार

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल का वार्षिक उत्सव के आन्तम दिन रविवार को श्री महावीर मलिक कृषि विशेषज्ञ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस पुनीत अवसर पर आचार्य स्वदेश जी गुरुकुल मथुरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि सच्चा ईश्वरभक्त सच्ची उपासना के माध्यम से अपने गुण, कर्म में सुधार लाते हुए न केवल अपना विकास कर सकता है बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक बन सकता है। ईश्वर में प्रीति तभी संभव है जब हमें उसका ठीक-ठीक परिचय हो। जीव प्रकृति की वास्तविक परिस्थित से परिचित हो। मनुष्य जन्म के प्रत्येक क्षण का अधिकाधिक लाभ उठाए।

इस अवसर पर भारतवर्ष के उच्चकोटि के भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र आर्य राजस्थान ने अपने गीतों के माध्यम से देशभक्तों की वीरता शहीदे आजम भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल तथा

आजादी प्राप्त कराने वालों को नमन करते हुए प्रकाश डाला। बहन संगीता आर्या ने भारतवर्ष की विदुषियों तथा वीरंगना रानी लक्ष्मीबाई, रानी पद्मिनी, गार्गी, विदालसा पर अपने मधुर गीतों से लोगों को प्रभावित किया। पं० हुकमचन्द शास्त्री ने आर्यसमाज के कार्यों तथा सर्वश्रेष्ठ कार्य यज्ञ के लाभों को विस्तृत रूप से वर्णित किया।

श्री महावीर मलिक ने अध्यक्षीय भाषण में अपने अतीत की याद दिलाई तथा आर्यसमाज को संगठित होकर कार्य करने तथा बुराइयों के खिलाफ आन्दोलन चलाने पर बल दिया। आर्यसमाज के सात दिन तक का कार्यक्रम पूर्णतया सफल रहा। सभी क्षेत्रवासियों ने वेदप्रचार में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डालचन्द आर्य प्रभाकर ने किया। आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों ने सहयोग प्रदान किया।

—वीरेन्द्रसिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हरिपुर, जुनानी जिला नुआपड़ा (उड़ीसा) का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 29, 30, 31 जनवरी 2016 को सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र जी आर्य कोलकाता के शुभ करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। स्थानीय विधायक एवं ओडिशा बी.जे.पी. के अध्यक्ष श्री बसन्त कुमार पण्डा जी के सहयोग से निर्मित गुरुकुल प्रवेशद्वार का लोकार्पण, गुरुकुल के प्रधान श्री जयदेव आर्य जी के सहयोग से प्रकाशित ओडिशा सत्यार्थप्रकाश का विमोचन, पांच कमरों का शुभ उद्घाटन, गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों का विविध शारीरिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे पूज्य साधु-सन्तों का उपदेश एवं अकाल पीड़ित 500 परिवारों को 25-25 किलो चावल व एक-एक साड़ी वितरण तथा ओडिशा के दो मूर्धन्य विद्वान् डॉ. देवव्रत

आचार्य जी एवं श्री प्रियव्रतदास जी का अभिनन्दन महोत्सव के अवसर पर किया गया। इस अवसर पर उपस्थित 60 से अधिक साधु-सन्तों एवं विद्वानों को शाल, श्रीफल एवं धनराशि प्रदान करके जीवन दशा में श्राद्ध तर्पण किया गया। इस कार्यक्रम में राज्यसभा सदस्य श्री भूपेन्द्रसिंह, पूर्व विधायक श्री राजूभाई धोलकिया, बी.जे.पी. अध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, जिला परिषद् उपाध्यक्ष श्री भानुप्रताप माझी आदि उपस्थित थे। ईश्वर की महती अनुकम्पा से त्रिदिवसीय समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शनदेव जी के मार्गदर्शन व सान्निध्य में गुरुकुल के सम्माननीय आचार्यगण, अधिकारी गण, गुरुकुल के हितैषी, सेवाभावी महानुभावों के परिश्रम व सहयोग से सम्पन्न हुआ।

—दिलीप कुमार जिज्ञासु आचार्य, गुरुकुल हरिपुर, जुनानी, जिला नुआपड़ा (उड़ीसा)

स्मृति यज्ञ का आयोजन

श्री विनीत कुमार हुड्डा सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार हुड्डा ने अपने निवास एफ-8, इन्द्रप्रस्थ कालोनी, सोनीपत रोड, रोहतक में दिनांक 16.3.2016 को अपनी दादी जी स्वर्गीय श्रीमती धर्मो देवी पत्नी भलेराम आर्य की तीसरी पुण्यतिथि पर यज्ञ करवाया। यज्ञ के पश्चात् परिजनों ने स्वर्गीय श्रीमती धर्मो देवी की याद में दो पंखे आचार्य बलदेव भवन, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को दान दिये। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा और गुरुकुल आश्रम आमसेना को 500-500 रुपये दान दिये। आचार्य हरिदत्त जी द्वारा लिखित जीवन की सफलता का रहस्य 'हमारी दिनचर्या' की 50 पुस्तकें वितरण करने और एक फलदार पौधा लगाने का संकल्प लिया ताकि प्रदूषणमुक्त जलवायु बना रहे।

—भलेराम आर्य, ग्राम सांची, जिला रोहतक

वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

स्वामी ईशानन्द की कर्मस्थली आर्यसमाज छानी बड़ी (हनुमानगढ़) राजस्थान का 30वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 16-17-18 फरवरी 2016 को विधिवत सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन यज्ञ के बाद गाँव में विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 11 बजे वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर स्वामी रामवेश जीन्द व महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही समेत काफी आर्यजन व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री बलजीत सिंह आर्य थे। गाँव के प्रतिष्ठित दम्पति यजमान बने। विद्यालय के कई छात्रों ने यज्ञोपवीत धारण किया। रात्रि के दो दिन विद्यार्थियों का शराब व भ्रूणहत्या पर प्रेरणादायक नाटक हुआ। लोगों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस उत्सव में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों, देश की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, शराबबन्दी, नारी उत्थान, भ्रूणहत्या,

धार्मिक पाठ्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० उदयवीर आर्य, पं० अमीचन्द आर्य, महाशय फूलसिंह आर्य, श्री नोरंगलाल सागठिया, बहिन अंजलि आर्या, बहिन कल्याणी आर्या के प्रेरणादायक समाज सुधार के भजन हुए।

इन प्रतिष्ठित आर्यजनों श्री नाथूराम मान पूर्व सरपंच छानीबड़ी, पुष्पा बंसल सरपंच छानीबड़ी, अमरसिंह पूनिया नोहर, श्रीमती सरोज सुधार, चौ० रामस्वरूप राणा, महावीर पूर्व तहसीलदार बाण्डाहेड़ी, श्री जयदेवसिंह आर्य, मोहनलाल आर्य भादरा, जगतपाल आर्य डॉक्टर विद्यालय, रामेश्वर लाल आर्य प्रधान, प्रि० सत्यवीर वर्मा, नोरंगलाल आर्य, महावीर आर्य आदि के अतिरिक्त गाँव गुवांड के काफी नर-नारी उपस्थित थे। श्री मानसिंह आर्य ने मंच का संचालन किया।

—जयवीर लाम्बा, मंत्री आर्यसमाज छानी बड़ी जिला हनुमानगढ़ (राज०)

ऋषि बोध दिवस सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत में ऋषि दयानन्द बोध दिवस (शिवरात्रि पूर्व) के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम युवा, वैदिक मनीषी विद्वान् आचार्य संजय याज्ञिक (मेरठ), वैदिक प्रवक्ता पं० सत्यवीर वेदालंकार (सोनीपत), आर्य भजनोपदेशक पं० प्रदीप जी, गुलशन जी फरीदाबाद ने सरल, सुबोध, हृदयग्राही प्रवचनों, सुमधुर मनोहारी भजनों के माध्यम से उपस्थित जनसमूह का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी एवं सहयोगी स्वामी सत्यवेश (पूर्व जयसिंह दहिया) ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजीव जैन ने उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

जिला वेद प्रचार मण्डल, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य केन्द्रीय प्रतिनिधि सभा तथा सोनीपत की आर्यसमाज, संस्थाओं की मांग पर श्री राजीव जैन जी ने सोनीपत के किसी मुख्य मार्ग एवं चौक का नामकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से कराने की प्रक्रिया का आश्वासन व्यक्त किया। मंच का कुशल संचालन श्री सुदर्शन आर्य महामंत्री तथा कपिल दहिया (पूर्व प्रधान, आर्यसमाज काठमण्डी ने किया)। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री अशोक गोयल जी ने सभी विद्वज्जनों, श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। यज्ञशेष/प्रसाद वितरण, शान्तिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

—सुदर्शन आर्य महामंत्री, आर्यसमाज काठमण्डी (सोनीपत)

जीवन निर्माण की मुख्य बातें—

1. दुनिया सुधरे या न सुधरे परन्तु हम न बिगड़ें।
2. आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण हेतु—सेवा, साधना, स्वाध्याय, सदाचार को अपनायें।
3. ईश्वर हमें हर समय देख, सुन, जान सकता है।
4. हे प्रिय ईश्वर! मैं आपको कभी न भूलूँ।
5. मैं आत्मा हूँ, मैं इस शरीर से प्रथम हूँ।
6. महान् वह है जिसके विचार महान् हों, जिसके व्रत-संकल्प महान् हों, जो महान् की उपासना करे।
7. अपने दोष और दूसरों के गुणों को देखना चाहिए इससे हम निर्दोष और

- गुणवान बन जायेंगे।
8. ईश्वर हमसे कह रहे हैं—हे प्रिय बच्चे! आपस में प्रेम से रहो। एक-दूसरे के मित्र बनो।
9. कम बोलें, मीठा बोलें, धीरे बोलें।
10. यज्ञ का अर्थ है—त्याग, सेवा, परोपकार, दान, देवपूजा, संगठन में रहना।
11. आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण हेतु—सेवा, साधना, स्वाध्याय और सदाचार को अपनायें।
12. आदर्श स्थिति—शान्त रहना, सम रहना, संयमित रहना, सावधान रहना, सृष्टिकर्ता से संयुक्त रहना।

—सूबेदार करतारसिंह आर्य, गोहाना (सोनीपत)

उनका जाना

□ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

गतांक से आगे....

महात्मा वही होते हैं जो स्वयं धर्म में चलकर सब संसार को चलाते हैं, जो आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म में, परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते-कराते हैं। आचार्य बलदेव जी ऋषि दयानन्द द्वारा दी गई महात्मा की इस कसौटी पर खरे उतरते थे। हरियाणा में कांग्रेस के



शासनकाल में जब श्री वीरेन्द्रसिंह आबकारी मन्त्री थे, उस समय सरकार की ओर से यह नीति बनाने की सूचना आई थी कि किरियाणा की दुकानों पर भी शराब की बोटल रखने की अनुमति दी जाएगी तथा छोटे-छोटे पाउच में भी शराबउपलब्ध होगी तथा घरों में भी पर्याप्त मात्रा में शराब की बोटल रखने की अनुमति दी जाएगी। इस प्रकार हरयाणा को गोवा बनाने की तैयारी थी। जब आचार्य बलदेव जी को यह सूचना मिली तो तुरन्त ही उन्होंने समाचार-पत्रों में इसका विरोध किया। उसके बाद वे अपनी जीप लेकर गाँव-गाँव उद्घोष करते घूमते थे—'देशों में देश हरियाणा, जहाँ दूध-दही का खाना, आज बदनाम हुआ हरयाणा, जहाँ शराब का पीना और मांस का खाना।'

उनके इस अभियान को देखकर विभिन्न सामाजिक संगठनों ने भी इस नीति का विरोध किया। विरोध करने वालों में भाजपा के क्षेत्रीय नेता भी थे, भले ही भाजपा वर्तमान में स्वयं ही गाँव-गाँव शराब के ठेके खोलने की नीति बना चुकी है। आचार्य बलदेव जी के प्रयास से उस समय वह आबकारी नीति टल गई व हरयाणा शराब की नदी में डूबने से बच गया, बेशक लड़ाई अभी

बाकी है। गुणी व्यक्ति गुणी को पसन्द करता है। मैंने बहुधा उनके मुख से सुनकर अनुमान लगाया कि वे स्वामी स्वतंत्रानन्द के बड़े प्रशंसक थे। इसी कारण वे स्वयं भी 'फील्ड मार्शल' थे। दूर-दूर बड़े-बड़े नेताओं से सजी मीटिंग, यात्रा आदि की अपेक्षा उन्हें गाँव-गाँव में प्रचार प्रिय था। बड़े-बड़े ऐसे साधु व नेता आपने देखे होंगे जिनसे मिलने के लिए आपको समय लेना पड़ता है। उनके पढ़ने, सोने, खाने, ध्यान के समय में प्रायः व्यवधान पड़ता रहता है। आचार्य बलदेव जी इनका पार पाकर समाज को समर्पित हो चुके थे। वे सर्वसुलभ साधु थे। यही कारण था कि आर्यजन व आम जनता भी सिद्धान्तों की रक्षा के लिए उनकी आज्ञा पर प्राणपण तैयार हो जाती थी।

2010 में राष्ट्रमण्डल के खेलों में विदेशी खिलाड़ियों के लिए गोमांस परोसने की बात सामने आई। उस समय फिर आचार्य बलदेव जी ने व्यापक आन्दोलन आरम्भ किया। गाँव-गाँव जाकर व आर्यसमाजों को भी निर्देश देकर कई हजार हस्ताक्षर करवाकर इसके विरोध में केन्द्र सरकार को भेजे। साथ ही एक निश्चित समय भी इस पर सकारात्मक कार्यवाही के लिए केन्द्र सरकार को दिया गया जिसके अभाव में दिल्ली में आन्दोलन की घोषणा की गई। निश्चित तिथि से पहले सरकार की ओर से आश्वासन आया कि गोमांस नहीं परोसा जाएगा। यह आर्यसमाज की बहुत बड़ी विजय थी। इस सबसे उन लोगों को अवश्य ही सबक लेना चाहिए जो उनकी कार्यप्रणाली देखकर कहते थे कि इससे कुछ नहीं होता। ऐसी स्थिति में आचार्य जी का एक ही संदेश होता था—'लगे रहो'। यही तो शास्त्रों का व कर्मठ मनुष्यों का संदेश होता है।

सदस्यता शुल्क भेजें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको 'आर्य प्रतिनिधि' नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क सम्बन्धी जानकारी के लिए व्यवस्थापक श्री रघुवरदत्त से मोबाइल नं० 07206865945 फोन नं० 01262-216222 से सम्पर्क करें।

-सम्पादक

'आर्य प्रतिनिधि' के सम्माननीय सदस्यों से निवेदन

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के समस्त सम्माननीय सदस्यों की सूचना यह निवेदन है कि 'आर्य प्रतिनिधि' अपने समस्त सदस्यों का डाटा अपडेट कर रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नंबर एवं ईमेल पता सदस्य संख्या के साथ शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे आपका नाम रिकार्ड में अपडेट किया जा सके।

-सम्पादक

जन्म-मरण के दुःखों से मुक्ति.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

जब इन्द्रियां अर्थों अर्थात् विषयों में, मन इन्द्रियों में और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय आत्मा के भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों को करने में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती है। वह आनन्द, उत्साह, निर्भयता, भय, शंका व लज्जा आदि अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्तता है वही मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है और जो विपरीत वर्तता है वह जन्म-मरण के बन्ध-जन्य दुःख भोगता है।

महर्षि दयानन्द जी ने उपर्युक्त पंक्तियों में मुक्ति में सहायक विवेक अर्थात् यथार्थ ज्ञान को प्रस्तुत किया है। जन्म-मरण के दुःख से मुक्ति के अन्य उपायों में 'वैराग्य', 'शट्क सम्पत्ति' तथा 'मुमुक्षुत्व' भी सम्मिलित हैं। सत्यार्थप्रकाश में इन पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है जिसके लिए इस ग्रन्थ का नौवां समुल्लास पढ़ना आवश्यक है। हम आशा करते हैं कि इस समुल्लास को पढ़कर पाठक जीवन विषयक इस यथार्थ ज्ञान से परिचित होकर लाभ उठा सकते हैं और अपने जीवन की सही दिशा देकर अपनी दशा बदल सकते हैं। इससे न केवल मुक्ति के यथार्थ ज्ञान को जानकर लाभान्वित होंगे अपितु समाज, देश व विश्व भी इस ज्ञान से लाभान्वित होगा। हमारी दृष्टि में तो यह ज्ञान व विषय कक्षा प्रथम से स्नातकोत्तर कक्षा तक अनिवार्य होना चाहिये। यदि हम इस ज्ञान से वंचित रहते हैं तो इसकी व्यक्तिगत हानि हमें तो होगी ही अपितु इससे देश व विश्व भी दुर्दशा को प्राप्त होगा व हो रहा है। आज का सारा विश्व अध्यात्म की उपेक्षा कर भौतिकवादी होकर अपने व अन्यो पर अन्याय व अत्याचार कर रहा है। कुछ व्यक्तियों के पास धन का अम्बार लगा है और कुछ को एक वा दो समय गेहूँ की सूखी रोटी भी उपलब्ध नहीं है। युद्ध व युद्ध सामग्री पर देश व विश्व का बहुत बड़ा धन व्यय होता है, युद्ध होते रहते हैं व लाखों लोग अपने प्राणों से हाथ धोते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यथार्थ ज्ञान व विवेक का न होना

है। परहित व दान आदि की उच्च भावनार्ये प्रायः समाप्त हो गई लगती हैं। सर्वत्र स्वार्थ व इसकी पूर्ति के लिए लोग व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से लगे हुए हैं।

मनुष्य निर्मित विधि-विधान भी लोगों के निजी स्वार्थों के का पोषण करते हैं तथा नैतिक मूल्यों के अनुरूप जीवन व्यतीत करने वाले पीड़ित व दुःखी रहते हैं। यह स्थिति भविष्य में किसी बड़े दुःख का कारण प्रतीत होती है। अतः आज वैदिक-सत्य-यथार्थ व मनुष्य मात्र के एकमात्र वास्तविक धर्म के प्रचार व प्रसार की आवश्यकता सबसे अधिक है। जब तक वेदों को अपना उचित स्थान नहीं मिलेगा, इस संसार का कल्याण व पूर्ण हित होना असम्भव है। लोग मत-मतान्तरों में विभक्त रहकर एक दूसरे को दुःख देते हुए स्वयं दुःखी रहेंगे और यह सिलसिला, शायद इसी प्रकार से, चलता रहेगा।

यथार्थ ज्ञान व इसके पोषक वैदिक धर्म के बिना मनुष्य को पूर्ण सुख व शान्ति कभी प्राप्त नहीं होगी। हमें यह भी अनुभव होता है कि वैदिक धर्म के अनुयायी जो प्रचार कर रहे हैं वह अपर्याप्त है जिसका प्रभाव नगण्य ही है। आज की परिस्थितियों के अनुरूप वेदों के प्रचार की प्रभावशाली योजनायें बनाकर व अपने स्वार्थों को दूर रखकर संगठित रूप से वेदों का प्रचार करना होगा। ऐसा होने पर ही भारत की अध्यात्म व परा विद्या बच सकेगी। इसके विपरीत केवल एकांगी भौतिकवादी जीवन व्यतीत करने से परिणाम भयंकर हो सकता है जैसा कुछ अतीत के विश्व युद्धों से हुआ था। हम सभी मित्रों वा पाठकों से सत्यार्थप्रकाश व वेदादि ग्रन्थों को अपने जीवन का एक अंग बनाने का आग्रह करते हैं। स्वाध्याय व साधना के इस कार्य को वह अपनी आजीविका के कार्यों से समय निकालकर कर सकते हैं। इससे उन्हें व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों ही रूपों में लाभ होगा। हम यह भी स्पष्ट कर दें कि हम एक साधारण कोटि के साधक हैं परन्तु स्वाध्याय व चिन्तन-मनन से हमें यह विचार पाठकों तक पहुंचाने की प्रेरणा हुई। हम आशा करते हैं कि इससे पाठकों को लाभ हो सकता है। इति।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा० रामपाल आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।